दास्तानें भीलवाड़ा

# मेवाड़ विश्वविद्यालय में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम पर आधारित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आगाज





▪दास्ताने भीलवाड़ा @ चित्तौड़गढ़/गंगरार

मेवाड़ का इतिहास सूर्य की तरह है जिसे ज्यादा देर तक छुपाया नहीं जा सकता। उक्त बातें मेवाड़ विश्वविद्यालय में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की स्वर्णिम यात्रा विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के पहले दिन उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुऐ डॉ. अशोक कुमार गदिया ने कही। उन्होने आगे कहा कि जैसे सूर्य को कभी ज्यादा देर तक छुपाया नहीं जा सकता वैसे ही मेवाड़ का इतिहास ही नहीं बल्कि देश की स्वतन्त्रता का सच्चा इतिहास भी एक न एक दिन सूर्य के समान निकल कर सब के दिलों में सच की चमक पैदा करेगा।

स्वागत भाषण देते हुए संगोष्ठी के संयोजक डॉ. लोकेन्द्र सिंह चुण्डावत ने कहा कि जितने भी स्वतन्त्रता संग्राम हुए है, उन्हे आने वाली पीढ़ीयों तक पहुंचाने के लिये इस संगोष्ठी का आगाज किया गया है। संगोष्ठी का परिचय वैद्य लक्ष्मीनारायण जोशी ने दिया। उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता सुरेन्द्र सिंह सोनी ने बताया कि अभी तो मेवाड़ का इतिहास किताबो के पन्नों में दर्ज है लेकिन इस तरह की संगोष्ठी के माध्यम से हरएक के जेहन में जज्ब हो जाएगा। प्रथम सत्र में शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए डॉ. अशोक कुमार गदिया ने चार स्वतन्त्रता सेनानी महापुरूषों दुर्गादास राठौड़, गुरू गोविन्द सिंह, महाराणा प्रताप और शिवाजी आदि का का जिक्र किया। उन्होने स्वामी दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द को स्वतन्त्रता संग्राम के विचारकों में से एक बताया। डॉ. हरिओम शर्मा ने शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए यह सुझाव दिया। कुलाधिपति डॉ. गदिया ने इस सुझाव की सराहना करते हुए इसे अकादमिक परिषद में अनुमोदन हेतु निर्देश दिया। द्वितीय सत्र में डॉ. हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोत, गोपाल जाट, विक्रम सिंह, श्वेता नन्द लाल पंचोली, डॉ. शुभदा पाण्डेय ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र के अध्यक्ष डॉ. मोहन साहू तथा उपाध्यक्ष डॉ. अरूणा दुबे रहीं। तृतीय सत्र में डॉ. हेमन्द्र सिंह सारंग देवोत, बिरदी चन्द, बालकृष्ण लड्डा और डॉ. मनोज कुमार बहरवाल ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र के अध्यक्ष डॉ. हरि सिंह और उपाध्यक्ष डॉ. शुभदा पाण्डेय रहीं। संगोष्ठी का आरम्भ कुलगीत एवं सरस्वती वंदना के साथ तथा समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। कार्यक्रम का संचालन राजेश भट्ट तथा डॉ. योगेश व्यास ने किया। इस अवसर पर अकादमिक निदेशक डी.के. शर्मा, निदेशक, ट्रेनिंग एवं प्लेसमेंट, हरीश गुरनानी, उपकुलसचिव दीप्ति शास्त्री, डीन फाइन आर्ट्स प्रो. डॉ. चित्रलेखा सिंह, डायरेक्टर रिसर्च प्रो. चेताली अग्रवाल, डीन इन्जिनियरिंग डॉ. आर. राजा, डॉ. गुलजार अहमद, डॉ. पीयूष शर्मा, डॉ. निखिल गर्ग, डॉ. भरत वैष्णव, डॉ. जोरावर सिंह, प्रवीण टांक, अभिषेक श्रीवास्तव, पहलवान सालवी, डॉ. सन्दीप शर्मा, डॉ. हितकरण सिंह, रोमेन्द्र सिंह, रतन वैष्णव, राकेश, विभिन्न संकायों एवं विभागों के अध्यक्ष सहित अन्य षिक्षकगण एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

# मेवाड़ विश्वविद्यालय में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम पर आधारित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आगाज

## भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की स्वर्णिम यात्रा विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का प्रथम दिन

न्यूज ज्योति

**चित्तौड़गढ़/गंगरार।** मेवाड़ का इतिहास सूर्य की तरह है जिसे ज्यादा देर तक छुपाया नहीं जा सकता। उक्त बातें मेवाड़ विश्वविद्यालय में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की स्वर्णिम यात्रा विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के पहले दिन उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुऐ डॉ. अशोक कुमार गदिया ने कही। उन्होने आगे कहा कि जैसे सूर्य को कभी ज्यादा देर तक छुपाया नहीं जा सकता वैसे ही मेवाड़ का इतिहास ही नहीं बल्कि देश की स्वतन्त्रता का सच्चा इतिहास भी एक न एक दिन सूर्य के समान निकल कर सब के दिलों में सच की चमक पैदा करेगा। उन्होने आगे कहा कि संविधान अंग्रेजो के शासन काल में लिखा गया। जो अंग्रेजो के अनुरूप ही भारतीय संस्कृति को छिन्न भिन्न कर प्रस्तुत करने का घृणित प्रयास था जो समय के साथ गलत साबित हो रहा है, अब आवश्यकता है कि हम इतिहास के उन अनछुए पहलूओं को जनमानस के सामने लाएं जिन्हे दुर्भावनापूर्वक छुपा दिया गया था या फिर तोड़-मरोड़कर गलत तरीके से हमारे समक्ष पेष किया गया। स्वागत भाषण देते हुए संगोष्ठी के संयोजक डॉ. लोकेन्द्र सिंह चुण्डावत ने कहा कि जितने भी स्वतन्त्रता संग्राम हुए है, उन्हे आने वाली पीढ़ीयों तक पहुंचाने के लिये इस संगोष्ठी का आगाज किया गया है। संगोष्ठी का परिचय वैद्य लक्ष्मीनारायण जोशी ने दिया। उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता सुरेन्द्र सिंह सोनी ने बताया कि अभी तो मेवाड़ का इतिहास किताबो के पन्नों में दर्ज है लेकिन इस तरह की संगोष्ठी के माध्यम से हरएक के जेहन में जज्ब हो जाएगा। प्रथम सत्र में शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए डॉ. अशोक कुमार गदिया ने चार स्वतन्त्रता सेनानी महापुरूषों दुर्गादास राठौड़, गुरू गोविन्द सिंह, महाराणा प्रताप और शिवाजी आदि का का जिक्र किया। उन्होने स्वामी दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द को स्वतन्त्रता संग्राम के विचारकों में से एक बताया। डॉ. हरिओम शर्मा ने शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए यह सुझाव दिया कि मेवाड़ इतिहास भी मेवाड़ विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए। कुलाधिपति डॉ. गदिया ने इस सुझाव की सराहना करते हुए इसे अकादमिक परिषद में अनुमोदन हेतु निर्देश दिया। द्वितीय सत्र में डॉ. हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोत, गोपाल जाट, विक्रम सिंह, श्वेता नन्द लाल पंचोली, डॉ. शुभदा पाण्डेय ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र के अध्यक्ष डॉ. मोहन साहू तथा उपाध्यक्ष डॉ. अरूणा दुबे रहीं। तृतीय सत्र में डॉ. हेमन्द्र सिंह सारंगदेवोत, बिरदी चन्द, बालकृष्ण लड्ढा और डॉ. मनोज कुमार बहरवाल ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र के अध्यक्ष डॉ. हरि सिंह और उपाध्यक्ष डॉ. शुभदा पाण्डेय रहीं। संगोष्ठी का आरम्भ कुलगीत एवं सरस्वती वंदना के साथ तथा समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। कार्यक्रम का संचालन राजेश भट्ट तथा डॉ. योगेश व्यास ने किया।

इस अवसर पर अकादमिक निदेशक डी.के. शर्मा, निदेशक, ट्रेनिंग एवं प्लेसमेंट, हरीश गुरनानी, उपकुलसचिव दीप्ति शास्त्री, डीन फाइन आर्ट्स प्रो. डॉ. चित्रलेखा सिंह, डायरेक्टर रिसर्च प्रो. चेताली अग्रवाल, डीन इन्जिनियरिंग डॉ. आर. राजा, डॉ. गुलजार अहमद, डॉ. पीयूष शर्मा, डॉ. निखिल गर्ग, डॉ. भरत वैष्णव, डॉ. जोरावर सिंह, प्रवीण टांक, अभिषेक श्रीवास्तव, पहलवान सालवी, डॉ. सन्दीप शर्मा, डॉ. हितकरण सिंह, रोमेन्द्र सिंह, रतन वैष्णव, राकेश, विभिन्न संकायों एवं विभागों के अध्यक्ष सहित अन्य शिक्षकगण एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

# मेवाड़ विश्वविद्यालय में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम पर आधारित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आगाज

**भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की स्वर्णिम यात्रा विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का प्रथम दिन**

राजस्थान दर्शन

**चित्तौड़गढ़/गंगरार।** मेवाड़ का इतिहास सूर्य की तरह है जिसे ज्यादा देर तक छुपाया नहीं जा सकता। उक्त बातें मेवाड़ विश्वविद्यालय में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की स्वर्णिम यात्रा विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के पहले दिन उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुऐ डॉ. अशोक कुमार गदिया ने कही। उन्होंने आगे कहा कि जैसे सूर्य को कभी ज्यादा देर तक छुपाया नहीं जा सकता वैसे ही मेवाड़ का इतिहास ही नहीं बल्कि देश की स्वतन्त्रता का सच्चा इतिहास भी एक न एक दिन सूर्य के समान निकल कर सब के दिलों में सच की चमक पैदा करेगा। उन्होंने आगे कहा कि संविधान अंग्रेजो के शासन काल में लिखा गया। जो अंग्रेजो के अनुरूप ही भारतीय संस्कृति को छिन्न भिन्न कर प्रस्तुत करने का घृणित प्रयास था जो समय के साथ गलत साबित हो रहा है, अब आवश्यकता है कि हम इतिहास के उन अनछुए पहलूओं को जनमानस के सामने लाएं जिन्हे दुर्भावनापूर्वक छुपा दिया गया था या फिर तोड़-मरोड़कर गलत तरीके से हमारे समक्ष पेष किया गया।

स्वागत भाषण देते हुए संगोष्ठी के संयोजक डॉ. लोकेन्द्र सिंह चुण्डावत ने कहा कि जितने भी स्वतन्त्रता संग्राम हुए है, उन्हे आने वाली पीढ़ीयों तक पहुंचाने के लिये इस संगोष्ठी का आगाज किया गया है। संगोष्ठी का परिचय वैद्य लक्ष्मीनारायण जोशी ने दिया। उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता सुरेन्द्र सिंह सोनी ने बताया कि अभी तो मेवाड़ का इतिहास किताबो के पन्नों में दर्ज है लेकिन इस तरह की संगोष्ठी के माध्यम से हरएक के जेहन में जज्ब हो जाएगा। प्रथम सत्र में शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए डॉ. अशोक कुमार गदिया ने चार स्वतन्त्रता सेनानी महापुरूषों दुर्गादास राठौड़, गुरू गोविन्द सिंह, महाराणा प्रताप और शिवाजी आदि का का जिक्र किया। उन्होने स्वामी दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द को स्वतन्त्रता संग्राम के विचारकों में से एक बताया। डॉ. हरिओम शर्मा ने शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए यह सुझाव दिया कि मेवाड़ इतिहास भी मेवाड़ विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए। कुलाधिपति डॉ. गदिया ने इस सुझाव की सराहना करते हुए इसे अकादमिक परिषद में अनुमोदन हेतु निर्देश दिया। द्वितीय सत्र में डॉ. हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोत, गोपाल जाट, विक्रम सिंह, श्वेता नन्द लाल पंचोली, डॉ. शुभदा पाण्डेय ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र के अध्यक्ष डॉ. मोहन साहू तथा उपाध्यक्ष डॉ. अरूणा दुबे रहीं। तृतीय सत्र में डॉ. हेमन्द्र सिंह सारंग देवोत, बिरदी चन्द, बालकृष्ण लढ्ढा और डॉ. मनोज कुमार बहरवाल ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र के अध्यक्ष डॉ. हरि सिंह और उपाध्यक्ष डॉ. शुभदा पाण्डेय रहीं। संगोष्ठी का आरम्भ कुलगीत एवं सरस्वती वंदना के साथ तथा समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। कार्यक्रम का संचालन राजेश भट्ट तथा डॉ. योगेश व्यास ने किया। इस अवसर पर अकादमिक निदेशक डी.के. शर्मा, निदेशक, ट्रेनिंग एवं प्लेसमेंट, हरीश गुरनानी, उपकुलसचिव दीप्ति शास्त्री, डीन फाइन आर्ट्स प्रो. डॉ. चित्रलेखा सिंह, डायरेक्टर रिसर्च प्रो. चेताली अग्रवाल, डीन इन्जिनियरिंग डॉ. आर. राजा, डॉ. गुलजार अहमद, डॉ. पीयूष शर्मा, डॉ. निखिल गर्ग, डॉ. भरत वैष्णव, डॉ. जोरावर सिंह, प्रवीण टांक, अभिषेक श्रीवास्तव, पहलवान सालवी, डॉ. सन्दीप शर्मा, डॉ. हितकरण सिंह, रोमेन्द्र सिंह, रतन वैष्णव, राकेश, विभिन्न संकायों एवं विभागों के अध्यक्ष सहित अन्य षिक्षकगण एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

# इतिहास के अनछुए पहलुओं को जनमानस के समक्ष लाने की जरुरत

## >> स्वतंत्रता संग्राम की स्वर्णिम यात्रा विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

**गंगरार, 24 सितम्बर (जसं.)।** मेवाड़ का इतिहास सूर्य की तरह है, जिसे ज्यादा देर तक छुपाया नहीं जा सकता।

मेवाड़ विश्वविद्यालय में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की स्वर्णिम यात्रा विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के पहले दिन उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुऐ डॉ. अशोक कुमार गदिया ने कहा कि देश की स्वतंत्रता का सच्चा इतिहास भी एक न एक दिन सूर्य के समान निकल कर सब के दिलों में सच की चमक पैदा करेगा। इतिहास अंग्रेजो के शासन काल में लिखा गया। जो अंग्रेजो के अनुरूप ही भारतीय संस्कृति को छिन्न भिन्न कर प्रस्तुत करने का घृणित प्रयास समय के साथ गलत साबित हो रहा है, अब आवश्यकता है कि हम इतिहास के उन अनछुए पहलुओं को जनमानस के सामने लाएं जिन्हे दुर्भावना पूर्वक छुपा दिया गया था या फिर तोड़-मरोड़कर गलत तरीके से हमारे समक्ष पेश किया गया।

संगोष्ठी के संयोजक डॉ. लोकेन्द्र सिंह चुण्डावत ने कहा कि जितने भी स्वतंत्रता संग्राम हुए है, उन्हे आने वाली पीढ़ीयों तक पहुंचाने

के लिये इस संगोष्ठी का आगाज किया गया है। संगोष्ठी का परिचय वैद्य लक्ष्मीनारायण जोशी ने दिया। उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता सुरेन्द्र सिंह सोनी ने बताया कि अभी तो मेवाड़ का इतिहास किताबो के पन्नों में दर्ज है, लेकिन इस तरह की संगोष्ठी के माध्यम से हर एक के जेहन में जज्ब हो जाएगा।

प्रथम सत्र में शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए डॉ. अशोक कुमार गदिया ने चार स्वतंत्रता सेनानी महापुरुषों दुर्गादास राठौड़, गुरु गोविन्द सिंह, महाराणा प्रताप और शिवाजी आदि का का जिक्र किया। उन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द को स्वतंत्रता संग्राम के विचारकों में से एक बताया। डॉ. हरिओम शर्मा ने शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए सुझाव दिया कि मेवाड़ इतिहास भी मेवाड़ विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए। कुलाधिपति डॉ. गदिया ने इस सुझाव की सराहना करते हुए इसे अकादमिक परिषद में अनुमोदन हेतु निर्देश दिया।

संगोष्ठी के द्वितीय सत्र में डॉ. हेमेन्द्र सिंह सारंग देवोत, गोपाल जाट, विक्रम सिंह, श्वेता नन्द लाल पंचोली, डॉ. शुभदा पाण्डेय ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र के अध्यक्ष डॉ. मोहन साहू तथा उपाध्यक्ष डॉ. अरूणा दुबे रहीं। तृतीय सत्र में डॉ. हेमन्द्र सिंह सारंग देवोत, बिरदी चन्द, बालकृष्ण लड्ढा और डॉ. मनोज कुमार बहरवाल ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र के अध्यक्ष डॉ. हरि सिंह और उपाध्यक्ष डॉ. शुभदा पाण्डेय रहीं।

संगोष्ठी का शुभारंभ कुलगीत एवं सरस्वती वंदना के साथ तथा समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। कार्यक्रम का संचालन राजेश भट्ट तथा डॉ. योगेश व्यास ने किया। इस अवसर पर अकादमिक निदेशक डीके शर्मा, निदेशक ट्रेनिंग एवं प्लेसमेंट हरीश गुरनानी, उप कुलसचिव दीप्ति शास्त्री, डीन फाइन आर्ट्स प्रो. डॉ. चित्रलेखा सिंह, डायरेक्टर रिसर्च प्रो. चेताली अग्रवाल, डीन इंजिनियरिंग डॉ. आर. राजा, डॉ. गुलजार अहमद, डॉ. पीयूष शर्मा आदि सहित विभिन्न संकायों एवं विभागों के अध्यक्ष, शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

# मेवाड़ का इतिहास सूर्य की तरह : डॉ.गदिया

गंगरार। मेवाड़ का इतिहास सूर्य की तरह है जिसे ज्यादा देर तक छुपाया नहीं जा सकता। यह विचार मेवाड़ विश्वविद्यालय में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की स्वर्णिम यात्रा विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुऐ डॉ. अशोक कुमार गदिया ने कही। उन्होने कहा कि अब आवश्यकता है कि हम इतिहास के उन अनछुए पहलूओं को जनमानस के सामने लाएं जिन्हे दुर्भावनापूर्वक छुपा दिया गया था या फिर तोड़-मरोड़कर गलत तरीके से हमारे समक्ष पेश किया गया। संगोष्ठी के संयोजक डॉ. लोकेन्द्र सिंह चुण्डावत ने कहा कि जितने भी स्वतन्त्रता संग्राम हुए है, उन्हे आने वाली पीढ़ीयों तक पहुंचाने के लिये इस संगोष्ठी का आगाज किया गया है। संगोष्ठी का परिचय वैद्य लक्ष्मीनारायण जोशी ने दिया। मुख्य वक्ता सुरेन्द्र सिंह सोनी ने बताया कि अभी तो मेवाड़ का इतिहास किताबो के पन्नों में दर्ज है लेकिन इस तरह की संगोष्ठी के माध्यम से हरएक के जेहन में जज्ब हो जाएगा। डॉ. हरिओम शर्मा ने शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए यह सुझाव दिया कि मेवाड़ इतिहास भी मेवाड़ विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए। द्वितीय सत्र में डॉ. हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोत, गोपाल जाट, विक्रम सिंह, श्वेता नन्द लाल पंचोली, डॉ. शुभदा पाण्डेय ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र के अध्यक्ष डॉ. मोहन साहू तथा उपाध्यक्ष डॉ. अरूणा दुबे थें। संचालन राजेष भट्ट तथा डॉ. योगेष व्यास ने किया। इस अवसर पर डी.के. शर्मा, हरीष गुरनानी, दीप्ति शास्त्री, प्रो. डॉ. चित्रलेखा सिंह, प्रो. चेताली अग्रवाल, डॉ. आर. राजा आदि उपस्थित रहे।

# भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम पर आधारित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आगाज

चित्तौड़गढ़ (प्रात:काल संवाददाता)। मेवाड़ का इतिहास सूर्य की तरह है जिसे ज्यादा देर तक छुपाया नहीं जा सकता। उक्त विचार मेवाड़ विश्वविद्यालय में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की स्वर्णिम यात्रा विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के पहले दिन उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुऐ डॉ. अशोक कुमार गदिया ने व्यक्त किये। डॉ. लोकेन्द्र सिंह चुण्डावत ने कहा कि जितने भी स्वतन्त्रता संग्राम हुए है, उन्हे आने वाली पीढ़ीयों तक पहुंचाने के लिये इस संगोष्ठी का आगाज किया गया है। संगोष्ठी का परिचय वैद्य लक्ष्मीनारायण जोशी ने दिया। उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता सुरेन्द्र सिंह सोनी ने बताया कि अभी तो मेवाड़ का इतिहास किताबो के पन्नों में दर्ज है लेकिन इस तरह की संगोष्ठी के माध्यम से हर एक के जेहन में जज्ब हो जाएगा। प्रथम सत्र में शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए डॉ. गदिया ने चार स्वतन्त्रता सेनानी महापुरूषों दुर्गादास राठौड़, गुरू गोविन्द सिंह, महाराणा प्रताप और शिवाजी आदि का जिक्र किया। उन्होने स्वामी दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द को स्वतन्त्रता संग्राम के विचारकों में से एक बताया। डॉ. हरिओम शर्मा ने शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए यह सुझाव दिया कि मेवाड़ इतिहास भी मेवाड़ विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए। कुलाधिपति डॉ. गदिया ने इस सुझाव की सराहना करते हुए इसे अकादमिक परिषद में अनुमोदन हेतु निर्देश दिया। द्वितीय सत्र में डॉ. हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोत, गोपाल जाट, विक्रम सिंह, श्वेता नन्द लाल पंचोली, डॉ. शुभदा पाण्डेय ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र के अध्यक्ष डॉ. मोहन साहू तथा उपाध्यक्ष डॉ. अरूणा दुबे रहीं। तृतीय सत्र में डॉ. हेमन्द्र सिंह सारंग देवोत, बिरदी चन्द, बालकृष्ण लड्ढा और डॉ. मनोज कुमार बहरवाल ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र के अध्यक्ष डॉ. हरि सिंह और उपाध्यक्ष डॉ. शुभदा पाण्डेय रहीं। संगोष्ठी का आरम्भ कुलगीत एवं सरस्वती वंदना के साथ तथा समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। कार्यक्रम का संचालन राजेश भट्ट तथा डॉ. योगेश व्यास ने किया। इस अवसर पर अकादमिक निदेशक डी.के. शर्मा, निदेशक, ट्रेनिंग एवं प्लेसमेंट, हरीश गुरनानी, उपकुलसचिव दीप्ति शास्त्री, डीन फाइन आर्ट्स प्रो. डॉ. चित्रलेखा सिंह, डायरेक्टर रिसर्च प्रो. चेताली अग्रवाल, डीन इन्जिनियरिंग डॉ. आर. राजा, डॉ. गुलजार अहमद, डॉ. पीयूष शर्मा, डॉ. निखिल गर्ग, डॉ. भरत वैष्णव, डॉ. जोरावर सिंह, प्रवीण टांक, अभिषेक श्रीवास्तव, पहलवान सालवी, डॉ. सन्दीप शर्मा, डॉ. हितकरण सिंह, रोमेन्द्र सिंह, रतन वैष्णव, राकेश, विभिन्न संकायों एवं विभागों के अध्यक्ष सहित अन्य शिक्षकगण एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

संगोष्ठी में मौजूद विश्वविद्यालय परिवार के सदस्य।

# इतिहास के अनछुए पहलुओं को जनमानस के समक्ष लाने की जरूरत

## >> स्वतंत्रता संग्राम की स्वर्णिम यात्रा विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

**गंगरार, 24 सितम्बर (जसं.)।** मेवाड़ का इतिहास सूर्य की तरह है, जिसे ज्यादा देर तक छुपाया नहीं जा सकता।

मेवाड़ विश्वविद्यालय में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की स्वर्णिम यात्रा विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के पहले दिन उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. अशोक कुमार गदिया ने कहा कि देश की स्वतंत्रता का सच्चा इतिहास भी एक न एक दिन सूर्य के समान निकल कर सब के दिलों में सच की चमक पैदा करेगा। इतिहास अंग्रेजो के शासन काल में लिखा गया। जो अंग्रेजो के अनुरूप ही भारतीय संस्कृति को छिन्न भिन्न कर प्रस्तुत करने का घृणित प्रयास समय के साथ गलत साबित हो रहा है, अब आवश्यकता है कि हम इतिहास के उन अनछुए पहलुओं को जनमानस के सामने लाएं जिन्हें दुर्भावना पूर्वक छुपा दिया गया था या फिर तोड़-मरोड़कर गलत तरीके से हमारे समक्ष पेश किया गया।

संगोष्ठी के संयोजक डॉ. लोकेन्द्र सिंह चुण्डावत ने कहा कि जितने भी स्वतंत्रता संग्राम हुए है, उन्हे आने वाली पीढ़ीयों तक पहुंचाने के लिये इस संगोष्ठी का आगाज किया गया है। संगोष्ठी का परिचय वैद्य लक्ष्मीनारायण जोशी ने दिया। उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता सुरेन्द्र सिंह सोनी ने बताया कि अभी तो मेवाड़ का इतिहास किताबो के पन्नों में दर्ज है, लेकिन इस तरह की संगोष्ठी के माध्यम से हर एक के जेहन में जज्ब हो जाएगा।

प्रथम सत्र में शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए डॉ. अशोक कुमार गदिया ने चार स्वतंत्रता सेनानी महापुरुषों दुर्गादास राठौड़, गुरु गोविन्द सिंह, महाराणा प्रताप और शिवाजी आदि का का जिक्र किया। उन्होने स्वामी दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द को स्वतंत्रता संग्राम के विचारकों में से एक बताया। डॉ. हरिओम शर्मा ने शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए सुझाव दिया कि मेवाड़ इतिहास भी मेवाड़ विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए। कुलाधिपति डॉ. गदिया ने इस सुझाव की सराहना करते हुए इसे अकादमिक परिषद में अनुमोदन हेतु निर्देश दिया।

संगोष्ठी के द्वितीय सत्र में डॉ. हेमेन्द्र सिंह सारंग देवोत, गोपाल जाट, विक्रम सिंह, श्वेता नन्द लाल पंचोली, डॉ. शुभदा पाण्डेय ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र के अध्यक्ष डॉ. मोहन साहू तथा उपाध्यक्ष डॉ. अरूणा दुबे रहीं। तृतीय सत्र में डॉ. हेमन्द्र सिंह सारंग देवोत, बिरदी चन्द, बालकृष्ण लड्ढा और डॉ. मनोज कुमार बहरवाल ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र के अध्यक्ष डॉ. हरि सिंह और उपाध्यक्ष डॉ. शुभदा पाण्डेय रहीं।

संगोष्ठी का शुभारंभ कुलगीत एवं सरस्वती वंदना के साथ तथा समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। कार्यक्रम का संचालन राजेश भट्ट तथा डॉ. योगेश व्यास ने किया। इस अवसर पर अकादमिक निदेशक डीके शर्मा, निदेशक ट्रेनिंग एवं प्लेसमेंट हरीश गुरनानी, उप कुलसचिव दीप्ति शास्त्री, डीन फाइन आर्ट्स प्रो. डॉ. चित्रलेखा सिंह, डायरेक्टर रिसर्च प्रो. चेताली अग्रवाल, डीन इंजिनियरिंग डॉ. आर. राजा, डॉ. गुलजार अहमद, डॉ. पीयूष शर्मा आदि सहित विभिन्न संकायों एवं विभागों के अध्यक्ष, शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

# मेवाड़ का इतिहास सूर्य की तरह है

## भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम पर आधारित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

चित्तौड़गढ. मेवाड़ का इतिहास सूर्य की तरह है जिसे ज्यादा देर तक छुपाया नहीं जा सकता। उक्त बातें मेवाड़ विश्विद्यालय में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की स्वर्णिम यात्रा विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के पहले दिन सत्र की अध्यक्षता करते हुऐ डॉ.अशोक कुमार गदिया ने कही। उन्होंने कहा कि जैसे सूर्य को कभी ज्यादा देर तक छुपाया नहीं जा सकता वैसे ही मेवाड़ का इतिहास ही नहीं बल्कि देश की स्वतन्त्रता का सच्चा इतिहास भी एक न एक दिन सूर्य के समान निकल कर सब के दिलों में सच की चमक पैदा करेगा। उन्होंने कहा कि संविधान अंग्रेजों के शासन काल में लिखा गया। जो भारतीय संस्कृति को छिन्न भिन्न कर प्रस्तुत करने का प्रयास था जो समय के साथ गलत साबित हो रहा हैए अब आवश्यकता है कि हम इतिहास के उन अनछुए पहलुओं को जनमानस के सामने लाएं जिन्हे दुर्भावनापूर्वक छुपा दिया गया था ।संगोष्ठी के संयोजक डॉण् लोकेन्द्र सिंह चुण्डावत ने कहा कि जितने भी स्वतन्त्रता संग्राम हुए हैए उन्हे आने वाली पीढ़ीयों तक पहुंचाने के लिये इस संगोष्ठी का आगाज किया गया है। संगोष्ठी का परिचय लक्ष्मीनारायण जोशी ने दिया। मुख्य वक्ता सुरेन्द्र सिंह सोनी ने बताया कि अभी तो मेवाड़ का इतिहास किताबों के पन्नों में दर्ज है लेकिन इस तरह की संगोष्ठी के माध्यम से हर एक के जेहन में जज्ब हो जाएगा। प्रथम सत्र में शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए डॉ. अशोक कुमार गदिया ने चार स्वतन्त्रता सेनानी महापुरूषों दुर्गादास राठौड़, गुरू गोविन्द सिंह, महाराणा प्रताप और शिवाजी आदि का का जिक्र किया। डॉ. हरिओम शर्मा ने शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए यह सुझाव दिया कि मेवाड़ इतिहास भी मेवाड़ विष्वविद्यालय के पाठ्यर म में शामिल किया जाए। दूसरे सत्र में डॉण् हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोतए गोपाल जाटए विर म सिंहए श्वेता नन्द लाल पंचोलीए डॉण् शुभदा पाण्डेय ने शोध पत्र प्रस्तुत किए। इस सत्र के अध्यक्ष डॉण् मोहन साहू तथा उपाध्यक्ष डॉण् अरूणा दुबे रहीं। तृतीय सत्र में डॉ. हेमन्द्र सिंह सारंग देवोत, बिरदी चन्द, बालकृष्ण लढ़ा और डॉ. मनोज कुमार बहरवाल ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र के अध्यक्ष डॉ. हरि सिंह और उपाध्यक्ष डॉ. शुभदा पाण्डेय रहीं। संचालन राजेश भट्ट तथा डॉण् योगेश व्यास ने किया। इस अवसर पर अकादमिक निदेशक डीण्केण् शर्माए निदेशकए ट्रेनिंग एवं प्लेसमेंटए हरीश गुरनानीए उपकुलसचिव दीप्ति शास्त्री, डीन फाइन आर्ट्स चित्रलेखा सिंह, चेताली अग्रवाल, आर. राजा, गुलजार अहमद, पीयूष शर्मा, निखिल गर्ग, भरत वैष्णव, जोरावर सिंह प्रवीण टांक उपस्थित रहे।